International Journal of Education and Science Research Review
October- 2019, Volume-6, Issue-5 ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सर्ग सम्बन्धित आधुनिक दृष्टिकोण का संक्षिप्त विश्लेषण

[1]देवेन्द्र कुमार , [2]डॉ.नागेंद्र नागर , [3]डॉ.सरोज चौधरी
[1]शोध छात्र ,[2]शोध निर्देशक, [3]सह-शोध निर्देशक
[1,2,3]सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बरी,
झुंझुनू, राजस्थान

सर:
सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी सम्पूर्ण दर्शन के रहस्यों को प्रकाश में लाने के लिये जितने विज्ञान की आवश्यकता है उतना विज्ञान उनमें निहित है। पुराणों में सृष्टि उत्पत्ति, पदार्थ की अवस्थाओं आदि से सम्बन्धित जो अनेक रहस्यमय विवरण वर्णित हैं आधुनिक विज्ञान की परिकल्पना द्वारा निर्धारित तथ्य उनसे समानता रखते प्रतीत होते हैं। वैदिक काल से आज तक ऋषियों ने तपस्या, सत्य, श्रद्धा और दीक्षा के द्वारा इन रहस्यों का साक्षात्कार किया, वे ही आदि वैज्ञानिक थे। उनकी इसी परम्परा में आज के वैज्ञानिक भी सृष्टि सम्बन्धी जिज्ञासाओं के समाधान में लगे हुए हैं। हमारी सृष्टि में अनेक रहस्य छिपे हुए हैं। वैज्ञानिक अपनी सीमाओं और क्षमताओं को लेकर सृष्टि का अध्ययन आरम्भ करता है।

प्रस्तावना:
सृष्टि भी वैज्ञानिक की तपस्या, और आस्था पर विभोर होकर धीरे–धीरे अपने समस्त गूढ़ रहस्य वैज्ञानिकों के समक्ष व्यक्त करने लग जाती है, हिरण्यमय पात्र से ढका हुआ सत्य नग्नरूप में वैज्ञानिकों के प्रति अनावृत होने लगता है। प्राचीन ऋषियों ने इस सृष्टि सम्बन्धी जिन–जिन तत्त्वों की खोज की अथवा साक्षात्कार किया उन–उन तत्त्वों के नाम रूपान्तर से आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है, यद्यपि हमारे ऋषियों, मुनियों के पास आज के वैज्ञानिकों की भांति प्रयोगशालाएं नहीं थी तथापि उनका विशुद्ध अन्तःकरण मेषशालिनी प्रज्ञा ही स्वयं में प्रयोगशाला थी जिसके द्वारा उन्होनें सृष्टि के तत्त्वों का साक्षात्कार तथा विवेचन किया। समग्र ज्ञान को दो भागों में बांटा जा सकता है एक अन्तर्बोध पर आधारित अध्यात्म जो कि प्राचीन ऋषियों व मुनियों का ज्ञान है दूसरा परीक्षण, अनुभव तथा बताए गए तथ्यों के आधार पर भौतिक जगत् सम्बन्धी निष्कर्ष हैं जिन्हें विज्ञान कहा जाता है इस प्रकार ज्ञान व विज्ञान दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान विज्ञान के बिना अधूरा है, विज्ञान ज्ञान के बिना अधूरा है, दोनों की समष्टि कल्याण का कारण हैं। इस पेपर में सर्ग सम्बन्धी आधुनिक दृष्टिकोण तथा ऋषि मुनियों के दृष्टिकोण का वर्णन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों के सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी विचारों का दो रूपों में अध्ययन किया जा सकता है–

1. ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति सम्बन्धी कल्पनाएँ।
2. प्राणियों की उत्पत्ति सम्बन्धी कल्पनाएँ।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति सम्बन्धी कल्पनाएँ :
ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कैसे हुई इस बारे में विद्वानों के अलग–अलग मत है। हमारा सौर्य परिवार जिसमें सूर्य व इनके चारों ओर परिक्रमा करने वाले 8 ग्रह–बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, वरुण, यम, तथा इनमें से अधिकांश के उपग्रह सम्मिलित हैं व अन्य पदार्थ (ब्रह्माण्डीय धूल, धूमकेतु) शामिल हैं, ब्रह्माण्ड के ही अंग हैं। इस सौर्य परिवार एवं इसके सदस्य पृथ्वी के उद्‌गम के बारे में जो विभिन्न परिकल्पनायें वैज्ञानिकों एवं मनीषियों द्वारा की गई हैं वे ही समूच ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बारे में भी लागू मानी जाती है। ये परिकल्पनाऐं निम्नलिखित हैं इन्हें भी दो भागों में विभाजित किया जाता है–

(क) भौतिक वैज्ञानिकों की परिकल्पनाएँ
(ख) जन्तु–वैज्ञानिकों की परिकल्पनाएँ

(क) भौतिक वैज्ञानिक की परिकल्पनाएँ :
भौतिक वैज्ञानिकों ने ग्रहों, उपग्रहों और पृथ्वी की उत्पत्ति का कहीं गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा तो कहीं नीहारिकाओं द्वारा, कहीं तारों से तो कहीं चुम्बकत्व सिद्वान्त से सिद्ध किया हैं परन्तु वे जीव जन्तुओं की उत्पत्ति को वर्णित

करने में असमर्थ से प्रतीत होते है। इस वर्ग में निम्नलिखित सिद्धान्तों का वर्णन किया हैं जिन्हें यहाँ विवेचित किया जा रहा है–

बुफन की परिकल्पना
नैबुलर परिकल्पना
प्लेनेटेसिमल परिकल्पना

ज्वार परिकल्पना द्वितारा परिकल्पना विजकर परिकल्पना उल्का परिकल्पना फ्रैड हॉयल का चुम्बकत्व सिद्धान्त

बुफन की परिकल्पना :

इस अवधारणा के अनुसार सूर्य से एक बाह्य शक्ति (जैसे गुरूत्वाकर्षण बल) द्वारा पदार्थ बाहर की ओर खींचा गया। सूर्य से बाहर की ओर खींचे गये इस पदार्थ के ठण्डे होने से सूर्य के ग्रहों का निर्माण हुआ जिसमें हमारी पृथ्वी भी शामिल हैं।

नैबुलर परिकल्पना:

काण्ट की अवधारणा है कि ब्रह्माण्ड में पहले से ही शीतल, गतिहीन, कठोर पदार्थ थे। इसका खण्डन कर लाप्लास नामक वैज्ञानिकों ने नीहारिका परिकल्पना का प्रतिपादन किया। नीहारिकाएं बहुत छोटी–छोटी और सफेद रंग की होती है, जो अन्तरिक्ष में बहुत दूर–दूर तक बिखरी हुई दिखाई देती है। लोग इन्हें दूसरी मंदाकिनी संस्थाए या सर्पिल नीहारिकाएं कहते हैं। नीहारिकाएं अपनी धूरी पर घूर्णन करती है।

जिसके अनुसार ब्रह्माण्ड में आदि काल से ही गतिशील, विशाल एक तप्त नीहारिका विद्यमान थी जिसका निरन्तर शीतलन हो रहा था शीतलन की प्रक्रिया के कारण इसके आयतन में कमी आती गई। आयतन में कमी के कारण नीहारिका का मध्यभाग ऊपर उठ गया। ऊपर उठने से यह शीघ्र शीतल हो गया तथा ठोस हो गया। ठोस होने के कारण यह भाग नीहारिका के साथ गतिशील नहीं रह सका और विलग हो गया। इस प्रकार नौ छल्ले निहारिका से अलग हुए जिसमें एक पृथ्वी भी थी।

प्लेनेटेसिमल परिकल्पना:

यह अवधारणा मॉल्टन व चैम्बर लेन द्वारा प्रतिपादित है। इनके अनुसार जब सूर्य ब्रह्माण्ड में विचरण कर रहा था तब सूर्य से बडा एक तारा सूर्य के इतना निकट आया कि सूर्य के कुछ अंश उसकी सतह से छिटककर अलग हो गये इन अंशो के बाद मे मिलकर इकट्ठा हो जाने से ग्रहों व उपग्रहो का निर्माण हुआ अतः इन अंशों को प्लेनैटसिमल कहा गया है।

ज्वार परिकल्पना :

यह परिकल्पना जीन्स व जेफ्रीज की हैं इस परिकल्पना के अनुरूप एक बड़ा तारा जब वह ब्रह्माण्ड से गुजर रहा था, हमारे सूर्य के पास आया और इसके सूर्य की सतह पर उसी प्रकार ज्वार की लहरें उत्पन्न की जिस प्रकार सूर्य व चन्द्रमा मिलकर हमारी पृथ्वी के सागरों व महासागरों में ज्वार पैदा करते हैं। जैसे यह तारा हमारे सूर्य के और समीप आया हमारे सूर्य से एक तन्तु बाहर की ओर छिटक गया जो आखिरकार ग्रह बने। इन ग्रहों ने दूसरे ग्रहों व सूर्य के आकर्षण से अपने उपग्रह बनायें। इस प्रकार सौर्यमण्डल अस्तित्व में आया।

द्वितारा परिकल्पना:

यह परिकल्पना लिटिलटन द्वारा 1938 में प्रस्तुत की गई। इनके अनुसार सौर्यमण्डल के अस्तित्व में आने से पहले, एक साथी तारा सूर्य से कुछ दूरी पर मौजूद था। बाद में एक अन्य आक्रमण तारा इन दो तारों के बहुत करीब पहुँचा और दो तारों के बहुत करीब पहुँचा और उसने सूर्य के साथी तारे को जकड़ लिया और फिर उसे लेकर दूर चला गया। इस आक्रामक तारे के आगमन से आकर्षित हुए तन्तु बाद में सूर्य के नियन्त्रण में आ गयें जिन्होने बाद में ग्रह व उपग्रह को जन्म दिया।

विजकर की परिकल्पना :

इस अवधारणा के अनुसार सूर्य के चारों ओर प्रारम्भिक गैसीय आवरण में हाइड्रोजन व हीलियम गैसों की कहीं ज्यादा मात्रा मौजूद थी जो कि क्रमशः ब्रह्माण्ड में बिखर गई। वह पदार्थ जिससे ग्रह बने, बहते हुए धूल कणों के रूप में इस घूमते गैसीय आवरण के साथ घूमने लगे। घूमते हुए यह कण आपस में टकराये तो उनमें से प्रत्येक छोटे–छोटे टुकडों में टूट गये लेकिन जब एक बड़ा कण छोटे कण से टकराया तो दोनों मिलकर विलय हो गये और एक बड़ा कण बना। इस प्रकार कणों के समूहीकरण से ग्रहों व उपग्रहों का निर्माण हुआ।

(ख) जन्तु वैज्ञानिकों की परिकल्पना:

जीव विज्ञान में जीव जगत् की उत्पत्ति व विकास से सम्बन्धित वर्णन दृष्टिगोचर होता हैं। लैमार्क व ट्रेविरेनश नामक वैज्ञानिकों के अनुसार ''विज्ञान की वह शाखा जो जीवधारियों के अध्ययन से सम्बन्धित है जीव विज्ञान कहलाती है।'' जीव विज्ञान जीवितो का अध्ययन है।

बिग–बैंग परिकल्पना:

परिकल्पना के अनुसार बादल में कणों व प्रतिकणों के बीच टकराव के कारण भयंकर विस्फोट हुआ। विस्फोट के पश्चात् तापमान इतना उच्च था कि परमाणु तो क्या उसकी नाभि भी विखण्डित हो गई थी और कण तथा प्रतिकण स्वतन्त्र सत्ता में थे। कणों व प्रतिकणों की टक्कर से इतनी उष्मा उत्पन्न हुई कि मंडलक का सघन केन्द्र दीप्तिमान् हो उठता है। काण्ट के अनुसार आकर्षण तथा प्रतिकर्षण आदि बलों के परिणाम स्वरूप पदार्थ के कण किसी विशेष रूप से व्यवस्थित होने लगे तथा आकर्षण केन्द्रों के चारों ओर एकत्रित होने के साथ ही साथ घूर्णक गति प्राप्त करने लगे। Big-bang के 100 सैकेण्ड बाद तापमान 1010 सेल्सियस गिर गया तो इस तापमान में प्रोटोन्स व न्यूट्रान आपस में मिलकर परमाणु केन्द्रक बनाने लगे। इनमें से 25 प्रतिशत प्रोटोन्स एवं न्यूट्रान्स नष्ट होकर प्रोटोन्स में बदल जाते है, जो हाईड्रोजन परमाणु का केन्द्रक होता है। इनसे ही वर्तमान पदार्थ के हाइड्रोजन परमाणु बने जो परस्पर मिलकर बड़े परमाणु बन जाते हैं, फिर से ही महान् पिण्ड बन जाते है और उसी पिण्ड से एक आकाश गंगा बनी और इसके छोटे–छोटे चमकते पिण्डो से बने सितारे या नक्षत्र। ब्रह्माण्ड के अधिकांश नक्षत्र आज भी प्रज्वलित गैसों के पिण्ड मात्र ही है। दो हाईड्रोजन परमाणुओं के परस्पर बंध जाने से हीलियम का एक परमाणु बन जाता है, फिर हीलियम के परमाणु से, एक–एक करके अन्य हाइड्रोजन परमाणुओं के जुड जाने से अन्य तत्त्व बनते जाते है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथिवी जलती हुई गैसो के गोले के रूप में थी, जिसमें हाइड्रोजन व अन्य तत्वों के परमाणु संयत्र अवस्था में विद्यमान थे। लाखों करोड़ो वर्षो बाद जैसे–जैसे पृथ्वी ठण्डी होती गई, हाइड्रोजन, आक्सीजन, नाइट्रोजन व कार्बन आदि बाह्य सतह पर तैरने लगे और इन्होंने आदि कालीन पृथ्वी का वायुमण्डल बनाया। आदि वायुमण्डल की नाइट्रोजन और कार्बन लावा के तत्वों से मिलकर क्रमशः नाइट्राइडस एवं कार्बाइडस बने। कार्बाइडस पर गर्म जलवाष्प की प्रतिक्रिया से मीथेन बनी तथा नाइट्राइडस पर जलवाष्प की प्रतिक्रिया से अमोनिया बनी।

जल :

आधुनिक विज्ञान के अनुसार हाइड्रोजन के दो परमाणुओं और ऑक्सीजन के एक परमाणु पर विद्युत की प्रतिक्रिया के कारण जल का निर्माण हुआ। पौराणिक सिद्धान्त के अनुसार वायु और तेज की प्रतिक्रिया के कारण जल उत्पन्न हुआ। दर्शन शास्त्र में भी कहा गया है कि–

''अपां संघातो विलयनञ्च तेजः संयोगात्''

अर्थात् इन आपः कणों में संपीड़न (प्रेशर) उत्पन्न होने से क्रमशः एक परमाणु, एक अणु (हाइड्रा`जन) द्वयणुक अर्थात् दो प्रोटोन या इलैक्ट्रान वाला (हीलियम) त्रसरेणु अर्थात् तीन इलैक्ट्रान वाला (लीथियम) आदि अनेक गैसों धातुओं खनिजो आदि प्रकृति की उत्पत्ति होती चली गई। ऐसा प्रतीत होता है कि वायु तत्त्व ही गैसों का समुच्चय है और तेजस् विद्युत है तो यह वैज्ञानिक सिद्धान्त व दार्शनिक सिद्वान्त में समानता सिद्ध होती है।

वायु:

आधुनिक विज्ञान के अनुसार वायु, 1. नाइट्रोजन 2. ऑक्सीजन, 3. उत्कृष्ट गैसों (हीलियम, निऑन, आर्गन,

क्रिप्टॉन, जीनॉन) 4. कार्बनडाई ऑक्साइड अवयवों से युक्त है। पुराणों के अनुसार तामस अहंकार, विकृत आकाश, स्पर्श तन्मात्रा से वायु का निर्माण हुआ। सम्भवतः पुराणों में वर्णित ये तत्त्व ही विज्ञान में वर्णित गैसे हैं।

समय के साथ–साथ धीरे–धीरे पृथिवी की सतह ठण्डी होती गई आरै भारी वर्षा के कारण झील समुद्र व सागर बन गए। वर्षा के पानी में घुलकर वायुमण्डल की अमोनियां व मीथेन भी समुद्र के पानी में एकत्रित हो गये। वैज्ञानिक का मत है कि प्रथम जीव का उद्‌भव इन्हीं यौगिकों के रासायनिक संश्लेषण द्वारा समुद्र में हुआ।

इस सिद्धान्त की वैदिक व पौराणिक परम्परा से बहुत समानता हैं क्योंकि पुराणों में भी हिरण्यगर्भ अण्ड का दो भागों में विभाजन दर्शाया गया है वस्तुतः यह विभाजन ही बिग–बैंग का मूल आधार है। इस अण्ड से ही पर्वत और द्वीपादि आदि के सहित समुद्र, ग्रहगण के सहित सम्पूर्ण लोक तथा देव, असुर और मनुष्य आदि विविध वर्ग प्रकट हुए अर्थात् इसी से सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई। बिग–बैंग में कणों व प्रतिकणों के बीच भयंकर विस्फोट से ही सृष्टि उत्पत्ति को दर्शाया गया है। भौतिक वैज्ञानिकों ने पृथ्वी ग्रह व नक्षत्रों की उत्पत्ति को भिन्न–भिन्न ढंग से वर्णित किया है परन्तु जीव विज्ञान ने उसे बिग बैंग के माध्यम से स्पष्टता से वर्णित किया है।

जीवों की उत्पत्ति:

आधुनिक जन्तु वैज्ञानिकों तथा भौतिक वैज्ञानिकों में सबसे बड़ा अन्तर यह प्रतीत होता है कि आधुनिक वैज्ञानिकों का सृष्टि उत्पत्ति सिद्धान्त विशेषतः पृथ्वी व नक्षत्रों की उत्पत्ति से ही सम्बन्धित है। विशेष रूप से भौतिक वैज्ञानिक पृथ्वी तथा नक्षत्रों का ही वर्णन करते है। मानव जीवन से सम्बन्ध रखने वाला जीव विज्ञान है। जीव वैज्ञानिकों ने मानव जीवन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न परिकल्पनाएं प्रस्तुत की हैं–

स्वतः उत्पादन विशिष्ट सृष्टिवाद। ब्रह्माण्डवाद।
प्रलयवाद एवं आकस्मिक आकर्बनिक उत्पत्तिवाद।।

स्वतः उत्पादन:

थेल्स, ऐनैक्सीमैन्डर, क्जीनोफेनीस, ऐम्पीडोक्लीज, प्लैटो, अरस्तू आदि यही समझते थे कि तालाबों में कीचड़ से मछलियों, मेढ़कों आदि की , मांस कूडे करकट, बालों की गंदगी, विष्ठा, गोबर तथा ओस की बूंदों से कीड़े मकौडो की, पसीने से चीलरों की स्वतः उत्पत्ति हो जाती है। वान हेल्मोन्ट ने तो किसी अन्धेरे स्थान में गेहूँ में पसीने से भीगी गन्दी कमीज दबा देने से 21 दिन में चूहों की उत्पत्ति का दावा तक किया था। अब भी हमारे देश मे बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि पसीने से चीलर, बालों की गन्दगी से जूएँ, गोबर एव विष्ठा से मक्खियाँ तथा गधे के मूत्र से बिच्छु बन जाते हैं।

विशिष्ट सृष्टिवाद:

ईसा के बाद समाज में धर्म का तीव्र प्रचार हुआ। 'ईश्वर' जैसी अलौकिक शक्ति में लोगों की आस्था बढ़ी। धर्म प्रचारकों ने दावा किया कि 'ईश्वर' ने सभी विभिन्न जीव जातियों की पृथक् सृष्टि की है अतः जितनी जीव जातियाँ आज है वे प्रारम्भ में भी थी। जिनका निर्माण ईश्वर द्वारा किया गया।

ब्रह्माण्डवाद:

यह परिकल्पना रिचटर, प्रेयर, हेमहोज, ऐर्हीनियस, होइल, बोन्डी आदि के अनुसार है। उनका कहना है कि जीवन की उत्पत्ति या सृष्टि का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि ''जीवन'' अमर है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के समय ही निर्जीव और सजीव पदार्थों की एक साथ उत्पत्ति हुई।

रिचटर ने ब्रह्माण्डवाद में कहा कि ब्रह्माण्ड के किसी अज्ञात भाग या नक्षत्र से, अन्तरिक्षी गर्द के साथ सरल जीवों के बीजाणुओं या अन्य प्रकार के कणों के रूप में ''जीवद्रव्य'' अकस्मात् ही आदि पृथ्वी पर आ पहुँचा।

प्रलयवाद:

आधुनिक वैज्ञानिक क्यूवियर के अनुसार पृथ्वी पर समय–समय पर प्रलय होती है जिससे पर्वत समुद्र में धस जाते

हैं, जगह–जगह समुद्र की तलहटी पर्वतों के रूप में उभर आती है और पहले सारे जीव नष्ट हो जाते हैं। पुराणों के अनुसार प्रलय काल में समस्त सृष्टि प्रकृति में लीन हो जाती है उस समय विश्व में भीषण संहार का दृश्य उपस्थित हो जाता है। प्रलय के बाद पृथ्वी पर फिर अकार्बनिक पदार्थों के आकस्मिक मिश्रण से नया ''जीव पदार्थ'' बन जाता है। **हेकल** ने इसी मत को यंत्रवाद के नाम से प्रतिपादित किया। उनका दावा था कि जिस प्रकार किसी पदार्थ के घोल में किन्ही दशाओं में अकस्मात् पदार्थ के रवे बन जाते हैं, उसी प्रकार आदि पृथ्वी पर किन्हीं वातावरणीय दशाओं में अकस्मात् आदि जीव रूपी रवे बने।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि भौतिक वैज्ञानिकों द्वारा वर्णित परिकल्पनाओं के द्वारा ब्रह्माण्ड, ग्रह, नक्षत्र आदि की उत्पत्ति को दर्शाया गया हैं। आधुनिक भौतिकवादी आज भी इस अबूझ पहेली को सुलझाने में लगें है। यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिचर्स के जिनेवा के पास स्थित फिजिक्स रिसर्च सेंटर के शोधकर्ता ब्रूनो मानसौली ने कहा कि पिछले दो साल से सारी जारी प्रयोग में विज्ञानी वहाँ तक चुके हैं, जहाँ पर वे हिग्स वोसोन हासिल कर सकते हैं। हिग्स बोसोन को ही गॉड पार्टिकल कहा गया हैं। गॉड पार्टिकल वे कण हैं, जिनकी ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। विज्ञानियों का कहना है कि हिग्स बोसोन की वजह से ही आकाशगंगा, ग्रह, तारें और उपग्रह बने। भौतिकी के स्टैंडर्ड मॉडल में हिग्स बोसोन एक लापता कड़ी है। यदि हिग्स बोसोन का पता चल जाता है, तो सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ, इसका पता चल जाएगा। जिसे भौतिक वैज्ञानिको ने तारा या सूर्य कहा है पुराणों में वह एक ब्रह्मात्मक ज्योति है। सम्भवतः यह ज्योति ही तारा व सूर्य है।

आधुनिक विज्ञान ने बिग–बैग परिकल्पना के माध्यम से सृष्टि उत्पत्ति को दर्शाया है जिसके अन्तर्गत बादल में कणों व प्रतिकणो के बीच भयंकर विस्फोट होता है जिसका साम्य पुराणों में वर्णित हिरण्यगर्भ से दृष्टिगोचर होता है इस अध्याय से यही स्पष्ट होता है कि आधुनिक वैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से जिसे आज खोज रहे हैं पुराणों में वह पहले से बीज रूप में विद्यमान था। पुराणों के हिरण्यगर्भ के फटने से समस्त सृष्टि की उत्पत्ति को दर्शाया गया है तथा पुरूष अथवा ब्रह्मा के अंगो से जीवों की उत्पत्ति को दर्शाया गया है जिसे स्पष्टता से वर्णित करने में आधुनिक वैज्ञानिक आज भी असमर्थ से दृष्टिगोचर होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नारद पुराण, सम्पा. तारिणीश झा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग इलाहाबाद 1981
2. गरुड पुराण, सम्पा. डा. रमाशंकर भट्टाचार्य, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1998
3. अरमकोश, अमर सिंह, चौ. सं. सी. सं. 2025
4. पारिजात कोश, सम्पा. डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा, प्र. दिल्ली, 2004
5. प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, लेखक डा. हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन दिल्ली1988
6. पुराण संदर्भ कोश, पद्मिनी मेनन्, प्रथम राम बाग कानपुर, 1969
7. प्रामाणिक हिन्दीकोश, रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कुटीर बनारस, 2008
8. बृहत् हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी 1984
9. भारतीय दर्शन, परिभाषा कोष, दीनानाथ शुक्ल, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, 1993
10. वाचस्पत्यम्, तारानाथ तर्क वाचस्पति, चौ. स. सी. वाराणसी, 1970
11. वैदिक कोश, सूर्यकान्त त्रिपाठी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 1963
12. शब्दकल्पद्रुम, मोतीलाल बनारसीदास जवाहरनगर, दिल्ली 1961
13. संस्कृत वाङ्मय कोश, डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर भारतीय भाजा परिषद्, शैक्सपीयर सारणी कलकत्ता, 1988
14. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोती. ब. दिल्ली 1954
15. हलायुध कोश, सम्पा. जयशंकर जोशी, हिन्दी समिति लखनऊ 1967
16. हिन्दू धर्मकोश, सम्पा. डा. राजवली पाण्डेय, हिन्दी सं. लखनऊ, 1978
17. हिन्दी शब्दसागर, रामचन्द्रवर्मा काशी नागरी प्रचारणी सभा, 2016
18. हिन्दी संस्कृत कोश, डा. रामस्वरूप रसिकेरूा, चौ. सं. सी. दिल्ली, 2005
19. ज्ञान विज्ञान कोश, राजेन्द्र कुमार राजीव, विद्या प्रकाशन मन्दिर दिल्ली, 1996